Series ONS **SET-1**

कोड नं.
Code No. **29/1**

रोल नं.
Roll No.

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ 8 हैं।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में 14 प्रश्न हैं।
- **कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।**
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है। प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा। 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे।

हिन्दी (ऐच्छिक)
HINDI (Elective)

निर्धारित समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*
Time allowed : 3 hours *Maximum Marks : 100*

सामान्य निर्देश :

(i) इस प्रश्न-पत्र में 14 प्रश्न हैं।

(ii) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(iii) विद्यार्थी यथासंभव अपने शब्दों में उत्तर लिखें।

खंड - 'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : **15**

प्राचीन काल से ही भारत में संयुक्त परिवारों का प्रचलन रहा है। एकल परिवार कभी भारतीय सोच में नहीं रहे। संयुक्त परिवार में प्रत्येक सदस्य अपनी सुरक्षा के प्रति आश्वस्त रहता था और परिवार के प्रति सम्मिलित उत्तरदायित्व और एक प्रकार से सामाजिकता का बोध जागृत रहता था। संतान के लालन-पालन, शिक्षा-दीक्षा, विवाह आदि सुख-दुख की चिंता सभी को रहती और संतान भी माँ-बाप के अतिरिक्त घर-परिवार के बड़े-बूढ़ों के हाथों पलकर बड़ी होती, उनके संस्कारों से पल्लवित होती, आजीवन निश्चिंत रहने का सुख भोगती हुई बड़ों के प्रति अपने उत्तरदायित्व को महसूस करती। इस प्रकार संयुक्त परिवारों में बचपन, यौवन और बुढ़ापा सभी आनन्द में बीतते।

अब संयुक्त परिवार प्रथा के टूटने से परिवारों में बिखराव आ गया है। चूँकि व्यक्ति परिवार की और परिवार समाज की इकाई है, इसलिए परिवारों के टूटने से समाज में भी बिखराव और अलगाव दिखाई पड़ रहा है। उसकी कल्पना शायद किसी ने भी नहीं की होगी। समाज के मूल्य बदल रहे हैं। मान्यताएँ बदल रही हैं और यह बदलाव की प्रक्रिया व्यक्ति से परिवार और परिवार से समाज में परस्पर हो रही है। लगता है जैसे नई पीढ़ी अनुशासन को बंधनों का नाम देती हुई धीरे-धीरे उच्छृंखलता की ओर बढ़ रही है।

परिवारों में बिखराव के पीछे पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी का वैचारिक संघर्ष भी है। पुरानी पीढ़ी अपनी रूढ़ियों, परंपराओं को त्याग नहीं पाती और अपनी सोच को ज़बरदस्ती लादना अपना कर्त्तव्य समझती है। नई पीढ़ी का आकाश बहुत विस्तृत है। उसे पाने के लिए उसे पुरातनता सहायक नहीं लगती। विचारों का संघर्ष तो है ही, नई पीढ़ी पर नए आकर्षणों का दबाव भी है। उनकी धनलिप्सा, स्वार्थ-भावना, सुख-चैन की ज़िंदगी जीने की ललक आदि का प्रभाव भी है। उनमें 'स्व' और 'अहं' प्रधान होता जा रहा है। पुरानी पीढ़ी अपने संस्कारों और मर्यादाओं में बँधी और नई पीढ़ी उन पर कुठाराघात करने को उतारू, जब तक इन दोनों में सामंजस्य न हो, परिवारों का विघटन होता रहेगा। देश के लिए यह शुभ लक्षण नहीं है। दोनों पीढ़ियों को समय और परिस्थिति के अनुकूल अपने-अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन लाना होगा। जब परिवारों में परस्पर सद्भावना, सहयोग, प्रेम, त्याग आदि की भावनाएँ प्रबल होंगी तो हर व्यक्ति सुखी होगा। परिवारों में खुशहाली होगी।

(क) 'संयुक्त परिवार' और 'एकल परिवार' से क्या तात्पर्य है? **2**

(ख) संयुक्त परिवार के लाभों का वर्णन कीजिए। **2**

(ग) संयुक्त परिवारों के टूटने से नैतिक मूल्यों का विघटन कैसे हो रहा है? **2**

(घ) नई पीढ़ी संयुक्त परिवार में क्यों नहीं रहना चाहती? **2**

(ङ) व्यक्ति, परिवार और समाज के अन्तः संबंधों पर टिप्पणी कीजिए। **2**

(च) आशय स्पष्ट कीजिए – 'नई पीढ़ी का आकाश बहुत विस्तृत है।' **2**

(छ) आपके विचार से दोनों पीढ़ियों में सामंजस्य कैसे संभव है? **2**

(ज) प्रस्तुत गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। **1**

2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **1x5=5**

किस भाँति जीना चाहिए किस भाँति मरना चाहिए,
सो सब, हमें निज पूर्वजों से याद करना चाहिए।
पद-चिह्न उनके यत्नपूर्वक खोज लेना चाहिए,
निज पूर्व-गौरव दीप को बुझने न देना चाहिए।।

आओ, मिलो सब देश-बांधव हार बनकर देश के
साधक बनें सब प्रेम से सुख शांतिमय उद्देश्य के।
क्या साम्प्रदायिक भेद से है ऐक्य मिट सकता अहो,
बनती नहीं क्या एक माला विविध सुमनों की कहो।

प्राचीन हो कि नवीन, छोड़ो रूढ़ियाँ जो हों बुरी,
बनकर विवेकी तुम दिखाओ हंस जैसी चातुरी।
प्राचीन बातें ही भली हैं – यह विचार अलीक है,
जैसी अवस्था हो जहाँ वैसी व्यवस्था ठीक है।।

मुख से न होकर चित्त से देशानुरागी हो सदा,
हैं सब स्वदेशी बंधु, उनके दुख भागी हो सदा।
देकर उन्हें साहाय्य भरसक सब विपत्ति व्यथा हरो,
निज दुख से ही दूसरों के दुख को अनुभव करो।।

(क) हमें अपने पूर्वजों का अनुसरण क्यों करना चाहिए? 1

(ख) कवि देश के सभी बंधुओं का आह्वान क्यों कर रहा है? 1

(ग) माला के उदाहरण से कवि ने क्या प्रतिपादित करना चाहा है? 1

(घ) हमें अंधविश्वासों और रूढ़ियों को छोड़कर क्या करने की प्रेरणा दी गई है? 1

(ङ) आशय स्पष्ट कीजिए - ''मुख से न होकर चित्त से देशानुरागी हो सदा''। 1

खण्ड 'ख'

3. निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर निबंध लिखिए। 10

(क) आतंकवाद और विश्वशांति

(ख) महिला-सुरक्षा का ज्वलंत प्रश्न

(ग) स्वच्छ भारत : सुंदर भारत

(घ) किसान जीवन के सुख-दुख

4. बढ़ती मँहगाई पर चिंता व्यक्त करते हुए किसी दैनिक समाचार-पत्र के सम्पादक को पत्र लिखिए। महँगाई की रोक-थाम के दो उपाय भी सुझाइए। 5

अथवा

विद्यालयी पढ़ाई के साथ-साथ आपने कंप्यूटर पर काम करने में भी दक्षता प्राप्त कर ली है। आप के शहर के सरकारी विद्यालयों में कंप्यूटर सिखाने वाले अध्यापकों के कुछ स्थान रिक्त हैं। अपनी रुचि और शैक्षणिक योग्यताओं का उल्लेख करते हुए राज्य के शिक्षा निदेशक को आवेदन पत्र लिखिए।

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए। **1x5=5**

(क) जनसंचार के मुख्य माध्यम कौन-कौन से हैं?

(ख) इंटरनेट पत्रकारिता आजकल बहुत लोकप्रिय क्यों है?

(ग) संचार प्रक्रिया में 'फीड बैक' का महत्त्व बताइए।

(घ) जनसंचार के दो कार्यों का उल्लेख कीजिए।

(ङ) समाचार संपादन के सिद्धांत के रूप में 'वस्तुपरकता' से आप क्या समझते हैं?

6. "वर्तमान शिक्षा-संस्थाओं में गुरु-शिष्य के परंपरागत आदर्श संबंधों में हो रहे ह्रास' पर चिंता व्यक्त करते हुए एक आलेख लिखिए। **5**

अथवा

'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए।

खंड - 'ग'

7. निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। **8**

दुख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज, जो नहीं कही!
हो इसी कर्म पर वज्रपात
यदि धर्म, रहे नत सदा माथ
इस पथ पर मेरे कार्य सकल
हों भ्रष्ट शीत के - से शतदल!
कन्ये, गत कर्मों का अर्पण
कर, करता मैं तेरा तर्पण!

अथवा

मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ। अपराधिहु पर कोह न काऊ।।

मो पर कृपा सनेहु बिसेखी। खेलत खुनिस न कबहूँ देखी।।

सिसुपन तें परिहरेउँ न संगू। कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू।।

मैं प्रभु कृपा रीति जियँ जोही। हारेहूँ खेल जितावहिं मोही।।

8. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** प्रश्नों के उत्तर लिखिए। **3+3=6**

(क) 'एक कम' कविता में कवि ने लोगों के आत्मनिर्भर, मालामाल और गतिशील होने के लिए किन तरीकों की ओर संकेत किया है? कवि ने स्वयं को हर होड़ से अलग क्यों कर लिया है?

(ख) 'कार्नेलिया का गीत' में भारत की किन विशेषताओं का उल्लेख किया गया है? उनका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(ग) कविता के आधार पर बनारस में वसंत के आगमन और उसके प्रभाव का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।

9. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो काव्यांशों** का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए। **3+3=6**

(क) जनम अवधि हम रूप निहारल नयन न तिरपित भेल।।

सेही मधुर बोल स्रवनहिं सूनल स्रुति पथ चरण न गेल।।

(ख) रकत ढरा आँसू गरा, हाड़ भए सब संख।।

धनि सारस होई ररि मुई, आइ समेटहु पंख।।

(ग) यह मधु है - स्वयं काल की मौना का युग-संचय,

यह गोरस-जीवन-कामधेनु का अमृत-पूत पय।।

10. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। **6**

प्रजापति की अपनी भूमिका भूलकर कवि दर्पण दिखाने वाला ही रह जाता है। वह ऐसा नकलची बन जाता है जिसकी अपनी कोई असलियत न हो। कवि का व्यक्तित्त्व पूरे वेग से तभी निखरता है जब वह समर्थ रूप से परिवर्तन चाहने वाली जनता के आगे कवि पुरोहित की तरह बढ़ता है। इसी परंपरा को अपनाने से हिन्दी साहित्य उन्नत और समृद्ध होकर हमारे जातीय सम्मान की रक्षा कर सकेगा।

अथवा

दुनिया में त्याग नहीं है, प्रेम नहीं है, परार्थ नहीं है, परमार्थ नहीं है – है केवल प्रचंड स्वार्थ। भीतर की जिजीविषा – जीते रहने की प्रचंड इच्छा ही–अगर बड़ी बात हो तो फिर यह सारी बड़ी-बड़ी बोलियाँ जिनके बल पर दल बनाए जाते हैं, शत्रुमर्दन का अभिनय किया जाता है, देशोद्धार का नारा लगाया जाता है, साहित्य और कला की महिमा गाई जाती है, झूठ है। इसके द्वारा कोई–न–कोई अपना बड़ा स्वार्थ सिद्ध करता है। लेकिन अंतरतर से कोई कह रहा है, ऐसा सोचना गलत ढंग से सोचना है।

11. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **4+4=8**

(क) निर्मल वर्मा ने 'स्वातंत्र्योत्तर भारत की सबसे बड़ी ट्रेजेडी'' किसे माना है और क्यों?

(ख) जलालगढ़ पहुँचने के बाद बड़ी बहुरिया के सामने हरगोबिन ने क्या संकल्प किया? उसके संकल्प में उसके चरित्र की कौनसी विशेषता उद्घाटित होती है?

(ग) शेर के मुँह और रोज़गार के दफ़्तर के बीच क्या अंतर बताया गया है? इस लघुकथा के माध्यम से लेखक ने हमारे समाज की किस व्यवस्था पर व्यंग्य किया है?

12. रामचंद्र शुक्ल **अथवा** भीष्म साहनी के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी भाषा-शैली की दो प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। **6**

अथवा

रघुवीर सहाय **अथवा** सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन 'अज्ञेय' के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी दो काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

13. ''तो हम सौ लाख बार बनाएँगे'' इस कथन के आलोक में उन जीवनमूल्यों का उल्लेख कीजिए जो हमें सूरदास से प्राप्त होते हैं। **5**

अथवा

''बच्चे द्वारा माँ का दूध पीना सिर्फ दूध पीना नहीं, माँ से बच्चे के सारे संबंधों का जीवन चरित होता है'' - निहित जीवनमूल्यों की दृष्टि से प्रस्तुत कथन की समीक्षा कीजिए।

14. (क) 'अपना मालवा' पाठ के लेखक को क्यों लगता है कि आज हम जिसे विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते हैं वह उजाड़ की अपसभ्यता है? तर्कयुक्त उत्तर दीजिए। **5**

(ख) शैला और भूप ने मिलकर पहाड़ पर नई ज़िंदगी की कहानी किस प्रकार लिखी? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। **5**